दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 30.06.2022

प्रकाशनार्थ

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान,लखनऊ एवं 'साहित्यार्चन' हिन्दी विभाग तथा गोरखनाथ साहित्यिक केन्द्र दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी 'स्वाधीनता संघर्ष और हिन्दी पत्रकारिता' (पं.दशरथ प्रसाद द्विवेदी के विशेष सन्दर्भ में)

दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर के सभागार में **पं. दशरथ प्रसाद द्विवेदी के विशेष सन्दर्भ में आयोजित 'स्वाधीनता संघर्ष और हिन्दी पत्रकारिता'** विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए **अध्यक्ष उ.प्र. हिन्दी संस्थान प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त** ने कहा कि स्वाधीनता संघर्ष के दौर में हिन्दी भाषा और हिन्दी पत्रकारिता दोनों संघर्ष कर रही थी। इस कालखण्ड में हिन्दी, उर्दू और हिन्दूस्तानी का संघर्ष 'स्वाधीनता संघर्ष और हिन्दी पत्रकारिता' के संघर्ष के रूप में भी देखा जा सकता है।

प्रो. गुप्त ने बताया कि स्वाधीनता संघर्ष के दौर में पत्रकारिता का उद्देश्य दीनदयाल उपाध्याय के 'अन्त्योदय' जैसा रहा है जिसमें जन–जन तक राष्ट्रीयता की भावना का प्रचार–प्रसार मुख्य रहा है। स्वाधीनता पूर्व पत्रकारिता 'ध्येय वाक्य' पर आधारित रही है जो स्वाधीनता बाद प्रोफेशनल हो गयी और आज की पत्रकारिता सेन्सेशनल हो चुकी है। डॉ. गुप्त ने आगे कहा कि असली गुलामी सांस्कृतिक गुलामी होती है और सांस्कृतिक गुलामी भाषा की गुलामी होती है। गोरखपुर की हिन्दी पत्रकारिता के सन्दर्भ का उल्लेख करते हुए आपने कहा कि गोरखपुर की हिन्दी पत्रकारिता का एक स्वर्णिम अध्याय रहा है जिसका प्रारम्भ 1881 ई. में 'रियाजुल' अखबार से होता है। डॉ. गुप्त ने आयोजन के उद्देश्य की चर्चा करते हुए बताया कि संस्थान आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर 'स्मृति–संरक्षण' पर केन्द्रित है जिसके माध्यम से हम अपनी साहित्यिक स्मृतियों को संरक्षित करने का प्रयास कर रहे है।

मुख्य अतिथि पूर्व अध्यक्ष–हिन्दी विभाग (दी.द.उ.गो.वि.वि.) प्रो. के.सी.लाल ने बताया कि भारतीय पत्रकारिता का आरम्भ स्वर्णिम अध्याय है जिसके प्रथम संवाहन 'नारद' रहे है जिन्हें हम विश्व का प्रथम सन्देशवाहक कह सकते हैं। डॉ. लाल ने कहा कि अंग्रेजों द्वारा स्थापित 'प्रेस' ही उनके गले की फाँस बन गया। अंग्रेजों ने अपनी सुविधा के लिए प्रेस का प्रयोग किया और हमनें उसे स्वाधीनता संघर्ष, जन–जागरण के रूप में प्रयोग में लाया। हिन्दूस्तान में पत्रकारिता का जन्म 30 मई 1826 को 'उदन्त मार्तण्ड' के रूप में हुआ और इसके 14 वर्ष बाद भारत के इन्दु भारतेन्दु का जन्म हुआ। भारतेन्दु को हिन्दी पत्रकारिता का केन्द्र भी कहा जाता है और भारतेन्दु हिन्दी पत्रकारिता के शीर्ष भी है।

प्रो. लाल ने भारतेन्दु, भारतेन्दु साहित्य और भारतेन्दु की पत्रकारिता को वह दौर बताया जहाँ से पत्रकारिता और स्वाधीनता संघर्ष का चरम विकास होता है। भारतेन्दु ने लोक जागरण का कार्य किया है, उन्होंने बताया कि भारतेन्दु अंग्रेजों के चाटुकार नहीं बल्कि सच्चे देशभक्त थे। भारतेन्दु के कथन 'स्वत्व निज

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

भारत गहे' का उल्लेख करते हुए प्रो. लाल ने कहा कि जब तक रोजी–रोटी की भाषा हिन्दी नहीं बनेगी तब तक हम स्वाधीन, स्वत्व, आत्मबोध को नहीं जान सकते है।

विषय प्रवर्तन करते हुए डॉ. गोपेश्वर दत्त पाण्डेय ने कहा कि स्वाधीनता आन्दोलन बिना पत्रकारिता के गति नहीं प्राप्त कर सकता था, पत्रकारिता ने राष्ट्रीय आन्दोलन के विकास में नव जागृति का कार्य किया है। लोकतंत्र की सफलता पत्रकारिता पर ही आधारित है।

विशिष्ट अतिथि प्रो. सिद्धार्थशंकर ने अपने उद्‌बोधन में बताया कि 'देश हितैषिता' आजादी के पूर्व हिन्दी पत्रकारिता की छवि रही है। स्वतंत्रता आन्दोलन के समय अधिकांश पत्र उर्दू और फारसी में प्रकाशित होत रहें है इस दौरान हिन्दी भाषा और हिन्दी पत्रकारिता का भी संघर्ष चल रहा था। अंग्रेजों की नीति भी हिन्दी विरोधी रही हैं कारण था कि नौकरी प्राप्त करने के लिए फारसी या उर्दू जानना जरूरी था। हिन्दी पत्रकारिता इस कालखण्ड में सांस्कृतिक और राजनीतिक समझ जागृत करने का माध्यम बनी।

विशिष्ट अतिथि प्रो. शर्वेश पाण्डेय ने कहा कि स्वाधीनता संघर्ष की बात करते समय हम सावरकर को भूल जाते है। इतिहासकारों ने आकस्मिक कारणों को ही प्रधान मानकर इतिहास लिख डाला है। किसी घर को आग लगने पर आग लगाने वाले को छोड़कर इतिहास लिखनें वालों ने माचिस पर आरोप लगाने का कार्य किया है। प्रो. शर्वेश ने कहा कि बिना राष्ट्रीय चेतना को समझे हिन्दी पत्रकारिता की समझ और जानकारी नहीं हो सकती है। हिन्दी पत्रकारिता के आदि उन्नायकों ने अपने युगबोध के प्रति चेतना जागृत रखी हैं।

इस अवसर पर आचार्य हिन्दी विभाग, दी.द.उ.गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर–**प्रो. प्रत्यूष दूबे की पुस्तक 'पं. दशरथ प्रसाद द्विवेदी' का विमोचन** किया गया। प्रो. प्रत्यूष दूबे ने 'द्विवेदी जी और हिन्दी पत्रकारिता' पर केन्द्रित अपने व्याख्यान में कहा कि पं. दशरथ प्रसाद द्विवेदी ने गोरखपुर को नई दिशा और गति प्रदान किया। 6 अप्रैल 1919 को स्वदेश पत्रिका का प्रकाशन हुआ इसके एक सप्ताह बाद 13 अप्रैल 1919 को इसका द्वितीय अंक प्रकाशित हुआ, उसी समय जलिवाला बाग काण्ड हुआ, जिस पर द्विवेदी जी ने सम्पादकीय लिखा। इस सम्पादकीय से स्वदेश और द्विवेदी जी के साथ गोरखपुर को भी एक नवीन चेतना, पहचान प्रदान किया।

प्रो. प्रत्यूष जी ने द्विवेदी जी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आप गणेश शंकर विद्यार्थी से प्रभावित होकर ब्रिटिश हुकुमत द्वारा प्राप्त दरोगा पद त्यागकर स्वाधीनता संघर्ष की राह पर चल पड़े। गणेश शंकर विद्यार्थी की अनुपस्थिति में द्विवेदी जी 'प्रताप' पत्र का भी कुछ समय सम्पादन कार्य किया।

इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारम्भ स्वास्तिक वाचन, मंगल ध्वनि एवं दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। इस अवसर पर महाविद्यालय परिवार द्वारा अतिथियों को अंगवस्त्र एवं प्रतीक चिन्ह प्रदान कर उनका स्वागत किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओमप्रकाश सिंह ने अतिथियों के प्रति स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यक्रम में अध्यक्ष हिन्दी विभाग, डॉ. सत्येन्द्र प्रताप सिंह, डॉ. नित्यानन्द श्रीवास्तव संचालक डॉ. विभा सिंह एवं अमिता दूबे, डॉ. भगवान सिंह, डॉ. राकेश कुमार, डॉ. मित्रपाल सिंह, डॉ. अदिति दूबे के अतिरिक्त सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु से प्रो. हरीश कुमार शर्मा, डॉ. सत्येन्द्र दूबे, डॉ. जय सिंह, डॉ. सच्चिदानन्द चौबे, डॉ. रेनू त्रिपाठी,

दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, दी.द.उ.गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर से प्रो. कमलेश कुमार गुप्त, प्रो. विमलेश मिश्र, डॉ. सुनील यादव के साथ डॉ. अमित भारती, डॉ. पूर्णेश नारायण सिंह, डॉ. ब्रजेश कुमार त्रिपाठी, डॉ. अनुभव श्रीवास्तव, डॉ. अमरनाथ पाण्डेय, डॉ. अनुपमपति त्रिपाठी, डॉ. अमित मिश्रा आदि उपस्थित रहे।

समापन सत्र की अध्यक्षता कर रहे **प्रो. सुरेन्द्र दूबे** ने देवेन्द्र बंगाली, भगवती सिंह, दशरथ प्रसाद द्विवेदी पर पुस्तक प्रकाशित करने के लिए कार्यकारी अध्यक्ष उ.प्र. हिन्दी संस्थान, प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त को धन्यवाद दिया। अपनी मूल प्रतिज्ञा वैध आन्दोलन का पक्ष रखने पर दशरथ जी कायम रहे। उनकी वैध सिद्धान्त को बाबू हरिशचन्द्र जी की पंक्ति इस प्रकार है– जो भरा नही है भावों से, बहती जिसमें रसधार नही, वह हृदय नही है वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नही।

कार्यक्रम के वक्ता डॉ. गोपेश्वर दत्त पाण्डेय जी ने कहा कि स्वदेश बिना विज्ञापन के प्रकाशित होता था हिन्दी ही वह भाषा है जो स्वतंत्रता आन्दोलन में हमें सफल बना सकती है। **प्रो. प्रत्यूष दूबे** ने कहा कि हमारा उद्देश्य है कि हिन्दूस्तानियों का हित करना स्वदेश का उद्देश्य है स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद ही भारत की सांस्कृतिक चेतना अक्षुण्ण रह सकती है।

पं. दशरथ प्रसाद द्विवेदी के पौत्र स्वदेश द्विवेदी जी ने अपने पिता और दादा के कार्यो का उल्लेख किया। **डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय** जी ने कहा कि गोरखपुर तीर्थ स्थली है। गोरखपुर पत्रकारिता की भूमि एवं उर्दू पत्रकारिता की जन्मभूमि है। **कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री हर्षवर्धन शाही** जी ने कहा कि गोरखपुर की पत्रकारिता पर गर्व होता है। दो आदर्श पं. दशरथ प्रसाद द्विवेदी और ज्ञान प्रकाश राय के कथनी–करनी एक हैं। पं.दशरथ प्रसाद द्विवेदी जी गोरखपुर पत्रकारिता के भीष्म पितामह थे और भीष्म की तरह जीये। **कार्यक्रम का आभार ज्ञापन महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओमप्रकाश सिंह** ने किया।

प्रो.(डॉ.)ओम प्रकाश सिंह
प्राचार्य